सूर्य प्रकाश मिश्र की चार कविताएँ

मन्दिर और ईश्वर

ढ़ेरों प्रश्न खड़े हैं खेतों खलिहानों में
मगर किसी उत्तर का अब तक पता नहीं है

खेत थक गये हैं सपनों की फसल उगाकर
ऊब गये हैं बीज उम्मीदें ढ़ोते -ढ़ोते
सूख गया है आसमान का सारा पानी
रीत गये हैं मेघ हठीले रोते -रोते

बैठे हैं टकटकी लगाकर नैन अभागे
मगर किसी अवसर का अब तक पता नहीं है

दिखा नहीं सूरज का चेहरा दूर -दूर तक
घुटन बढ़ रही बहुत अधिक गहरी खाई है
शोर हो गया ठण्डक लेकर हवा चली है
बहुत दिन हुए अब तक पहुँच नहीं पाई है

खुशहाली लिख दिया नाम लिखनेवालों ने
मगर किसी अक्षर का अब तक पता नहीं है

चन्दन जैसी माटी के दिन बीत गये हैं
उसे पूजने वाले सब बेकार हो गये
मिट्टी को मिट्टी की तरह समझने वाले
नये दौर में ओहदों के हकदार हो गये

चमक रहा है लोकतन्त्र का पावन मन्दिर
मगर किसी ईश्वर का अब तक पता नहीं है

----XXX----

एक मुट्ठी ओस

कम पड़ेगा बादलों का गाँव सारा
एक मुट्ठी ओस लेकर क्या करेंगे

प्राण प्यासे हैं हमारे कोख से ही
जी रहे सदियों पुराना घाव लेकर
खो गया सूरज कहीं पर वादियों में
जिसे आना था नया बदलाव लेकर

हवा ,पानी की वसीयत हो चुकी है
हम महज अफसोस लेकर क्या करेंगे

दाम क्या होगा पसीने की फसल का
नये युग में बहस लम्बी चल रही है
थक गये हैं देख कर सारी कवायद
झुक गये सीनों में धूनी जल रही है

याद है सारी नसीहत ,हर सुभाषित

फिर नया उद्घोष लेकर क्या करेंगे

कलम करके हमें जो पौधे लगे हैं
वो नये परिवेश में ही ढल गये हैं
उन्हें भी इस बात से मतलब नहीं है
पेड़ के पत्ते पुराने गल गये हैं

हमें अपनों ने भी जी भर के ठगा है
गैर के गुण दोष लेकर क्या करेंगे

----XXX----

गगनचुम्बी

भवन बनवाया गया था गगनचुम्बी
बोझ से उम्मीद के भहरा गया है

पिल पड़े सब छोड़ कर अख़बार वाले
खबर मोटे अक्षरों में ही छ्पेगी
करवटें कुछ दिन में ही दम तोड़ देंगी
जल रही धरती भला कब तक तपेगी

मर गये वादे सभी ताजी हवा के
धुवां काली सोच का गहरा गया है

बन गया है तंत्र सारा ऊँट गाड़ी
बिना कुछ खाये जगह से क्यों हिलेगा
प्रश्न लेकर ख्वाब लाइन में लगे हैं
चल रही बैठक सही उत्तर मिलेगा

खा गया था खेत सारा वो सिपाही
क्रान्ति का झण्डा पुनः फहरा गया है

आ गया त्योहार मेढ़क गा रहे हैं
राग फिर बरसात का सदियों पुराना
गिरगिटों की फौज कसमें खा रही है
आ गई है ओढ़ कर गुजरा जमाना

लोग सारा खेल पढ़ने में लगे हैं
कौन अपराधी किसे ठहरा गया है

----XXX----

धोखाधड़ी

ओस से भीगती पूस की रात में
रास्ता सो गया झोपड़ी सो गई
आग चूल्हे की थोड़ी जली बुझ गई
काम कम था धुएँ की लड़ी सो गई

पेट भरता नहीं खेत पर काम से
क्या करें पीढ़ियों से जो मजदूर हैं
आग लग जाये सपनों के व्यापार में
जो थे मजबूर वो अब भी मजबूर हैं

रह गया गाँव पीछे कहीं दौड़ में

उसकी खातिर समय की घड़ी सो गई

गाँव जीते रहे कल की उम्मीद पर
खो गया कल कहीं अब भी आया नहीं
लोग दावा बुलाने का करते रहे
पर किसी ने अभी तक बुलाया नहीं

सब रहें साथ हर हाथ को काम हो
जाने क्यों सोच इतनी बड़ी सो गई

एक टोली सियारों की रोने लगी
डर गया गाँव बढ़ते हुए शोर से
गर्म चूल्हे की यारी का हक मानकर
उठके कुक्कुर दहाड़ा बड़ेजोर से

सिर्फ रोने से ही बात बन जायेगी
हो के निश्चिन्त धोखाधड़ी सो गई

----XXX----

सूर्य प्रकाश मिश्र

बी 23/42 ए के, बसन्त कटरा, गांधी चौक, खोजवा निकट दुर्गा कुंड,

वाराणसी 221010, मोबाइल 09839888743, ई मेल surya.misra1958@gmail.com